सामयिक सलाह

अक्टूबर 2015	नवम्बर 2015	दिसम्बर 2015
• आलू की ट्यूब को डायथेन M-45 @ 2.5 ग्राम/लीटर का घोल में 5 मिनट तक डुबाकर कंद उपचार कर बुवाई करें। • टमाटर के नर्सरी के 15 दिन पूर्व फार्मोलीन के 10ml/ लीटर के घोल का मृदा उपचार कर लेवें। • सब्जी बीज को केप्टान ग्राम 2 ग्राम/किलो के हिसाब से बीजोपचार कर बुवाई करें। • नर्सरी मिट्टी में दीमक व चींटी के नियंत्रण हेतु क्लोरोपायरीफास 2ml/लीटर दवा के घोल का मृदा उपचार करें। • मिर्च, बैंगन व टमाटर में पौध गलन के बचाव हेतु केप्टान @ 2 ग्राम/लीटर घोल का मृदा उपचार एवं फोलियर छिड़काव करें। • सब्जी फसलों में रोपाई के बाद पानी देने उपरांत बतर आतेही गुड़ाई करें। • रोपाई के 45 दिन में 2-3 गुड़ाई अवश्य करें। • मटर में अर्किल किस्म की अगेती बुवाई करें। • मिर्च में चुड़ा-मुड़ा रोग के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड @ 0.4ml/लीटर का छिड़काव करें। • फूलगोभी, पत्तागोभी एवं प्याज की नर्सरी में बुवाई करें। • थाला बनाकर लालभाजी, मेंथी, धनिया, पालक की नर्सरी लगावें। • सब्जी फसल में उर्वरक की मात्रा का निर्धारण हेतु मिट्टी परीक्षण जरूर करावें। • रबी फसल पूर्व मिट्टी परीक्षण कराना चाहिए। • किस्म अनुसार धान, उड़द, मूंग की कटाई करें। • अरहर की शीघ्र पकने वाली किस्म में पुष्पन अवस्था में 2.1 डी.ए.पी. का पर्णीय छिड़काव करें। • सरसों की बोनी अक्टूबर की अंतिम सप्ताह तक अवश्य कर लेनी चाहिए। • देर से पकने वाली धान की किस्मों में ज्यादा पानी को निकालकर (कटाई के 15 दिन पूर्व) अलसी तिवरा की उतेरा बुवाई करें। • भूरा माहों के अधिक प्रकोप की अवस्था में इमीडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. का 125 मिली/हेक्टेयर की दर से पौधे के निचले हिस्से में केन्द्रित कर छिड़काव करें। • धान फसल में गर्दन झुलसा रोग से मिली या टीबूकोनजोल 1.5 मि.ली. दवा प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें। • मत्स्य तालाब के रखाव व उर्वरक की मासिक किट का छिड़काव करना एवं मछली बीज की बढ़ोत्तरी का सर्वेक्षण करना।	• हल्दी सब्जी पौध नर्सरी को रोपाई के पूर्व कार्बेडाजिंग ग्राम 1 ग्राम/लीटर + क्लोरोपायरीफास 2 ग्राम/लीटर मिली लीटर दवा से 20 मिनट तक जड़ उपचार करें। • विल्ट ग्रसित मृदा में फसल चक्र अपनावें। • आलू की 30-45 दिये की अवस्था में गुड़ाई कर नत्रजन की अनुशंसित मात्रा डालकर मिट्टी चढ़ावें। • फसलों को पाला से बचाने हेतु शाम को सिंचाई एवं खेत के चारों ओर जलाकर धुआ करें। • मटर को बुवाई से पूर्व राइजोबियम कल्चर (3 ग्राम किलो बीज) बीजोपचार करें। • सब्जी फसलों को निश्चित दूरी पर कतार में लगाना चाहिए। • मटर में पावडरी मिल्ड्यू के नियंत्रण हेतु हेक्साकोनाजोल (1 मिली/लीटर) के हिसाब से छिड़काव करें। • मिर्च में तंबाखु की इल्ली के नियंत्रण हेतु मिर्च में तंबाखु की इल्ली के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफास 40% + सायपरमेथ्रीन 4% का 2 मिली/लीटर के हिसाब से छिड़काव करें। • टमाटर के खेत के चारों ओर पीली गेंदा के पौधे ट्रेप क्राप के रूप लगावें। • उड़द/मुंग-मक्का फसल प्रणाली में खेत की अच्छी तैयारी कर मक्का की बीज 20 किलो/हेक्टेयर की दर से बोनी करें। • रबी फसलें जैसे चना, मसूर एवं मटर बुवाई करें। • रबी दलहनी फसल में खरपतवार प्रबंधन हेतु फ्लूक्लोरालिन 5 1.0 किलो सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई पूर्व मृदा में भली भांति मिलावे। • बुवाई पूर्व दलहनी फसलों को राइजोबियम कल्चर से बीज उपचार करें। • टाइकोडर्मा हारजिएनम द्वारा बीज उपचारित कर (5 ग्राम प्रति किलो बीज) मृदाजनित रोग के नियंत्रण के लिए उपयोग किया जा सकता है। • दलहनी फसलों में बीजोपचार के लिए (फफूंदनाशक+कीटनाशक + राइजोबियम) पद्धति अपना सकते हैं। • आलू में अगेती अंगमारी रोग की रोकथाम हेतु मेन्कोजेब/ताम्रयुक्त दवा (3 ग्राम/ली. पानी) दवा के घोल का छिड़काव करें। • मत्स्य तालाब में खाद व उर्वरक की मासिक किष्ट का छिड़काव करना एवं पुरक आहार देना।	• नदी के किनारे तरबूज लगाने हेतु नदी के किनारे तरबूज लगाने हेतु बीज पहले ट्रे में बुवाई कर पौधे तैयार करें। • तरबूज के बीज बुवाई के पुर्व कारबेंडा जिम 3 ग्राम/किलो के हिसाब से बीजोपचार करें। • टमाटर में फलछेदक कीट के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफास 40% + सायपर 4% + (2 ग्राम/5 लीटर) के हिसाब से छिड़काव करें। • सेम में रस चूसक कीड़े, एफीड के नियंत्रण के लिये इमिडाक्लोप्रिड (2 मिली/लीटर) का छिड़काव करें। • बैंगन में माइट के नियंत्रण हेतु डायकोफाल/2 ग्राम मिली लीटर का दवा छिड़काव करें। • कद्दूवर्गीय सब्जियों मिली लीटर पावडरी मिल्ड्यू के रोकथाम हेतु हेक्साकोनाजोल 1 मिली/लीटर का छिड़काव करें। • टमाटर व आलु में तिक ब्लाइट के नियंत्रण हेतु कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2 ग्राम / लीटर का छिड़काव करें। • रबी मक्का, मूंगफली में मिट्टी चढ़ने का कार्य करें। • गेहूँ में बुवाई की 21 दिन बाद ताज मूल अवस्था में सिंचाई करें। • गेहूँ में चौड़ी पत्ती की खरपतवार नियंत्रण हेतु 2,4 का उपयोग करें एवं संकरी पत्ती की नींदा हेतु आइसोप्रोटयूरन या मेटसलफ्यूरान का छिड़काव करें। • बरसीम में कटाई पश्चात् सिंचाई एवं नत्रजन की अनुशंसित मात्रा का उपयोग में लावें। • मिर्च के चुर्रा-मुर्रा रोग की रोकथाम के लिए मिथाइल डेमेटान कीटनाशी (1 मि.ली./ली. पानी) का छिड़काव 10-15 दिन के अंतराल में कर। • चने में फली भेदक के नियंत्रण हेतु पॉलीटिन 44 ई.सी. या प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. का 1 लीटर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन के बाद पुनः उक्त दवा का छिड़काव करें। • मत्स्य तालाब के पुरक आहार को मत्स्य वजनानुसार बढ़ाकर प्रारंभ करना।

केन्द्र में कार्यरत वैज्ञानिक

- डॉ.एस.के.वर्मा, कार्यक्रम समन्वयक, मो. : 9424214626
- डॉ.रेखा सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान), मो. : 9425517103
- डॉ.सौगात सासमल, विषय वस्तु विशेषज्ञ (मत्स्य विज्ञान), मो. : 9406027360
- श्री साकेत दुबे, विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी), मो. : 8817551202
- श्री कुणाल चंद्राकर, विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान) मो. : 9754377591
- डॉ.मनीष कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) मो. : 9754377591
- इंजी.रवीश केशरी, (मृदा एवं जल अभियांत्रिकी),मो. : 9425373479
- श्री एस.एम.अली हुमायूँ, कार्यक्रम सहायक (कीट विज्ञान) मो. : 9827909069

प्रेषक :
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद (छ.ग.)
पिन : 493 445
Email : kvkmahasamund@gmail.com

भारत शासन सेवार्थ   बुक पोस्ट

प्रति/श्रीमति/डॉ. ....

....

....

उन्नत कृषि   समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद (छ.ग.)

वर्ष - 7, अंक - 14   त्रैमासिक पत्रिका   अक्टूबर-दिसम्बर 2015

संपादक मण्डल

संरक्षक
डॉ. एस. के. पाटिल
कुलपति
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक
डॉ. एम.पी.ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवायें
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्त्रोत
डॉ. अनुपम मिश्रा
निदेशक कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, भा.कृ.अनु.प. जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक
डॉ. एस.के. वर्मा
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुंद

संपादक
डॉ. रेखा सिंह
(विषय वस्तु विशेषज्ञ - गृह विज्ञान)

सह-संपादक
डॉ. सौगात सासमल
(विषय वस्तु विशेषज्ञ-मत्स्य विज्ञान)
श्री साकेत दुबे
(विषय वस्तु विशेषज्ञ - उद्यानिकी)
श्री कुणाल चंद्राकर
(विषय वस्तु विशेषज्ञ-मृदा विज्ञान)
श्री मनीष कुमार सिंह
(विषय वस्तु विशेषज्ञ-सस्य विज्ञान)
श्री रविश केशरी
(विषय वस्तु विशेषज्ञ-मृदा एवं जल अभियांत्रिकी)
श्री एस.एम.अली हुमायूँ
(कार्यक्रम सहायक)

हर कदम, हर डगर किसानों का हमसफर
Agresearch with a human touch

कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द की गतिविधियां

विश्व मृदा दिवस पर कृषक कल्याण मेला एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण

कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द मे 5 दिसंबर 2015 को विश्व मृदा दिवस के अवसर पर जिला स्तरीय कृषक कल्याण मेला का आयोजन कृषि विभाग एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान मे किया गया एवं जिले के कृषको को मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती रूपकुमारी ओमप्रकाश चौधरी, संसदीय सचिव, महिला एवं बाल विकास व समाज कल्याण विभाग छ.ग. शासन ने की, कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. विमल चोपड़ा, विधायक महासमुन्द ने की, कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अतिथि के रूप मे श्रीमती गोपा मोती साहू, उपाध्यक्ष जिला पंचायत, महासमुन्द, श्रीमती अमृता नरेन्द्र चन्द्राकर, सभापति कृषि स्थायी समिति, जिला पंचायत महासमुन्द, श्री धरमदास महिलांग अध्यक्ष जनपद पंचायत, महासमुन्द, श्रीमती पुतलीबाई जीताराम पटेल, सभापति कृषि स्थायी समिति जनपद पंचायत महासमुन्द, श्री दाऊलाल सिन्हा, सरपंच ग्राम पंचायत भलेसर, श्री अरूण चन्द्राकर अध्यक्ष विकास खण्ड स्तरीय कृषक सलाहकार समिति, महासमुन्द उपस्थित थे।

कार्यक्रम के तकनीकी सत्र मे कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस. के. वर्मा ने विश्व मृदा दिवस एवं वर्ष 2015 अंतर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष की महत्ता के बारे मे जानकारी प्रदान की, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको एवं कृषि विभाग के अधिकारियो के द्वारा मृदा स्वास्थ्य एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड की उपयोगिता के बारे मे कृषको को जानकारी प्रदान की गई। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन भाषण मे मृदा स्वास्थ्य के प्रति कृषको को जागरूक होने की सलाह दी। किसान मेले मे विभिन्न विभागो के स्टाल भी लगाए मुख्य अतिथियो द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र प्रांगण मे पौध रोपण किया गया एवं कृषको को उन्नत किस्म के फलदार वृक्षो का वितरण भी किया गया।

माननीय श्री कुलपति जी का केविके भ्रमण

माननीय कुलपति डॉ. एस. के. पाटिल द्वारा दिनांक 09/10/2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, का भ्रमण किया गया। भ्रमण के दौराण डॉ. एस. एस. टुटेजा, प्रमुख वैज्ञानिक, निदेशालय विस्तार सेवायें, डॉ. जी. के. दास प्राध्यापक एवं

विभागाध्यक्ष कृषि मौसम विभाग डॉ. जे. एल. चौधरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री दाऊलाल सिन्हा सरपंच, ग्राम पंचायत भलेसर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, के समस्त अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे। भ्रमण कार्यक्रम के दौरान माननीय कुलपति एवं विश्वविद्यालय के अतिथियों द्वारा आम की "इंदिरा नंदी राज" किस्म रोपित किया गया। इसके अलावा महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजनान्तर्गत लिये गये, लाख उत्पादन परियोजना में सेमियालता पौधा को भी रोपाई की गयी।

कौशल विकास योजनान्तर्गत, पांच दिवसीय मत्स्य प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कौशल विकास योजनान्तर्गत, पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "मिश्रीत मछली पालन" के विषय पर दिनांक 7 दिसम्बर 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द में आयोजित किया गया । यह प्रशिक्षण कार्यक्रम मत्स्यकी विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित है एवं डॉ. एस. सासमल (मत्स्य वैज्ञानिक) इस कार्यक्रम का प्रशिक्षण समन्वयक थे। जिसमें महासमुन्द जिला के चयनित 20 मत्स्य कृषक, प्रशिक्षण में शामिल हुए। इस दौरान सामुदायिक तालाबों एवं निजी तालाबों में मिश्रीत मछली पालन की उन्नत विधि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। साथ ही साथ सम्बधित विशयों पर व्यवहारिक ज्ञान एवं प्रक्षेत्र भ्रमण भी करवाया गया। प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द, मछली पालन विभाग, छ.ग. शासन, मत्स्यकी विभाग, इं.गा.कृ.वि. रायपुर एवं मत्स्यकी महाविद्यालय, कवर्धा के वैज्ञानिको की सक्रिय भागीदारी रही। प्रशिक्षण के अंत में प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरण किया गया ।

कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रतिवेदन

कृषि विज्ञान केन्द्र, भलेसर, महासमुन्द में कृषकों को अखिल भारतीय कृषि मौसम अनुसंधान परियोजना – आदिवासी उपयोजना के तहत दो दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक 09–10 अक्टूबर 2015, 13–14 अक्टूबर 2015 एवं 15–16 अक्टूबर 2015 को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में ग्राम मालीडीह, परसाडीह, झालखम्हरिया, रोड़ा, जामलीकला, परसकोल, जीवनगढ़, भलेसर, पीढ़ी, तुसदा, कनेकेरा आदि जिले के विभिन्न ब्लाकों के 150 अनुसूचित जनजाति के कृषकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में कृषकों को जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य में समन्वित उत्पादन तकनीकी में प्रशिक्षण व कृषि से संबंधित तकनीकी जानकारी विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा दी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, भलेसर महासमुंद द्वारा स्वच्छता अभियान का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र, भलेसर महासमुंद द्वारा 01–03 अक्टूबर 2015 को स्वच्छता अभियान का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र एवं ग्राम भलेसर के मिडिल स्कूल में किया गया । इस अभियान में जय हिन्द कॉलेज भलेसर, मिडिल स्कूल भलेसर के छात्र छात्राएँ एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों, जय हिन्द कॉलेज व मिडिल स्कूल के प्रधान पाठक व शिक्षकगण के ने भाग लिया । कार्यक्रम में कॉलेज के छात्र–छात्राओं को सफाई के साथ फार्म प्रोड्यूस से जैविक खाद बनाना, परिवार के लिए पोषण वाटिका का निर्माण एवं ड्रिप से सिंचाई आदि के अभियान हेतु प्रेरित किया गया । स्कूल व कॉलेज के छात्र–छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक के दवारा ग्रामवासियों को स्वच्छता व बेटी बचावो अभियान के बारे में जागरुक किया गया । कार्यक्रम में ग्राम पंचायत, भलेसर के सरपंच श्री दाऊलाल सिन्हा, जय हिन्द कॉलेज के प्राचार्य डॉ. वाई.के. राजपूत तथा प्रधान पाठक जी उपस्थित थे । कॉलेज एवं स्कूल के छात्र–छात्राओं सहित ग्राम भलेसर के 400–500 ग्रामीण उपस्थित थे ।

इंदिरा किसान मितान त्रैमासिक पत्रिका अक्टूबर-दिसम्बर 2015

सांसद आदर्श ग्राम मे कृषि विज्ञान केन्द्र, द्वारा जय किसान जय विज्ञान सप्ताह का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द द्वारा दिनांक 23.12.2015 को सांसद आदर्श ग्राम कोमाखान तहसील–बागबाहरा जिला महासमुन्द में जय किसान जय विज्ञान, सप्ताह के उपलक्ष्य में एक दिवसीय उद्यानिकी संगोष्ठी, प्रदर्शनी सह प्रदर्शन एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की शुरुवात में श्री तेजन चन्द्राकर, सदस्य जनपद पंचायत बागबाहरा द्वारा में सरस्वती की प्रतिमा के सामने दीप प्रज्जवलित किया गया। इस दौरान कु. कुन्ती तांडी, सरपंच कोमाखान, डां एस.के. वर्मा, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, महासमुन्द के साथ श्री साकेत दुबे, विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी), डां सौगात शाश्मल, विषय वस्तु विशेषज्ञ (मछली पालन), श्री मनीष कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) कृषि विभाग से श्री एन.आर. चन्द्राकर, अनुविभागीय अधिकारी, कृषि विभाग महासमुन्द, श्री टी. जे. कठाने, वरीष्ठ कृषि विकास अधिकारी, बागबाहरा, श्री एल. आर. श्रीवास्तव, बी.टी. एम, आत्मा, बागबाहरा एवं श्री चन्द्रा तथा ग्राम कोमाखान के अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे ।

कार्यक्रम की शुरुवात करते हुए डां वर्मा द्वारा उद्यानिकी फसलो की उपयोगिता एंव महत्व पर प्रकाश डालते हुए उद्यानिकी में उन्नत उत्पादन तकनीक की जानकारी दी गयी। श्री साकेत दुबे द्वारा सब्जी एंव फलदार वृक्षों की उन्नत उत्पादन तकनीक एवं उनसे आय अर्जन के बारे में बताया गया। डॉ शाश्मल द्वारा मछली पालन एवं श्री मनीष सिंह के द्वारा उद्यानिकी फसलों में आवश्यक शस्य क्रियाओं की जानकारी दी गयी। कृषि विभाग के श्री एन.आर. चन्द्राकर, अनुविभागीय अधिकारी, कृषि विभाग महासमुन्द ने किसानों से धान के बाद धान से होने वाले नुकसान की जानकारी दी तथा रबी में उद्यानिकी फसलों को बढ़ावा देने की बात कही, वही विभाग के श्री कठाने द्वारा कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी, इस उद्यानिकी संगोष्ठी, प्रदर्शनी सह प्रदर्शन एवं जागरूकता कार्यक्रम में कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा के दौरान किसानो ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। जिससे की कार्यक्रम पूरी तरह सफल रहा, कार्यक्रम के आखिरी पड़ाव में कृषि विज्ञान केन्द्र, द्वारा मनरेगा योजना द्वारा तैयार किये पपीता, मुंगा, लौकी और करेला के पौधे का वितरण किया गया ,कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री लकेश सेठिया, ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, कोमाखान के साथ साथ श्री चमन ठाकुर, अब्दुल हामिद एवं साथियों का विशेष योगदान रहा। ज्ञात हो कि जय किसान जय विज्ञान, सप्ताह के उपलक्ष्य में एक दिवसीय उद्यानिकी संगोष्ठी, प्रदर्शनी सह प्रदर्शन एवं जागरूकता कार्यक्रम को राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, गुड़गांव (हरियाणा) द्वारा प्रायोजित किया गया था।

कृषि विज्ञान केन्द्र महासमुन्द द्वारा मां मंगला स्वसहायता समूह हेतु मशरूम उत्पादन का व्यवसायिक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र महासमुन्द द्वारा मॉ मंगला स्वसहायता समूह हेतु दो दिवसीय मशरुम उत्पादन पर व्यवसायिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस. के. वर्मा, के दिशा निर्देश में इस प्रशिक्षण में आयस्टर मशरूम उत्पादन पर मौखिक व प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन के सत्र में स्वसहायता समूह के प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम उत्पादन तकनीक पर बनी सी. डी. के द्वारा एवं केन्द्र के वैज्ञानिक डां. रेखा सिंह व श्री एस. एम. अली हुमायूँ के व्याख्यान द्वारा, बीज (स्पान) तैयार करना, माध्यम की तैयारी, बिजाई, मशरुम हाउस व ड्रोपड़ी की व्यवस्था, थैलों की देखभाल व तुड़ाई मशरूम फसल प्रबन्धन, आदि के विषय पर जानकारी दी गई। आयस्टर मशरूम को सफलतापूर्वक अनेक प्रकार के कृषि अवशिष्टों या माध्यमों में उगाया जा सकता है जो देश के पूर्वी, पश्चिमी एवं मध्य भागों में अधिक मात्रा में आसानी से उपलब्ध है। देश के पूर्वी भाग, जिसमें छत्तीसगढ़ क्षेत्र प्रमुख है और धान का पुआल, मशरूम बीज बोआई का अच्छा माध्यम है। मशरूम प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्रीमती लीना मोहर्ले जिला विकास प्रबंधक नाबार्ड, ने स्वसहायता समूह की महिलाओं को जानकारी दी की वे उत्पादक समूह बनाकर वित्तीय सहायता नाबार्ड के माध्यम से ले सकती है। उन्होंने जानकारी दी की नाबार्ड के द्वारा उत्पादक समुह को प्रशिक्षण, एक्सपोजर विजिट व मार्केटिंग के लिए वित्तीय सहायता का भी प्रावधान है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में वैज्ञानिक सौगात सासमल ने स्वसहायता समूह को मछली उत्पादक समूह बनाने के बारे में जानकारी भी प्रदान की।